खण्ड III

रोज़ाना की ज़िंदगी, संस्कृति और राजनीति

तीसरे खंड में आपका परिचय दैनिक जीवन के इतिहास से होगा। यहाँ आप खेल और पहनावे का इतिहास पढ़ सकेंगे।

इतिहास महज़ दुनिया की महान या नाटकीय घटनाओं की दास्तान नहीं है। यह हमारे जीवन की छोटी-मोटी बातों से भी उतना ही जुड़ा है। हमारे आसपास की हर चीज़ का एक इतिहास है-जो कपड़े हम पहनते हैं, जो खाना हम खाते हैं, जो दवाएँ हम लेते हैं, जो संगीत सुनते हैं, जो साहित्य पढ़ते हैं और जो खेल खेलते हैं। ये सब चीज़ें वक्त के साथ बनी हैं या बदली हैं। रोज़मर्रा की चीज़ होने के चलते हमारा ध्यान उन पर नहीं जाता। हम ठहरकर सोचते भी नहीं कि सौ साल पहले इनमें से कोई चीज़ कैसी रही होगी; या अलग-अलग समाज के लोग भोजन या कपड़े के बारे में कैसे भिन्न-भिन्न तरीके से सोचते हैं।

अध्याय 7 इतिहास व खेल पर है। इसमें आप एक ऐसे खेल का इतिहास पढ़ेंगे जिसने पिछले कुछ दशकों से अपने देश के लोगों को दीवाना कर रखा है। क्रिकेट से जुड़ी खबरें अखबारों की सुर्खियाँ बन जाती हैं। क्रिकेट का खेल आयोजित करके राष्ट्रों के बीच दोस्तियाँ गाँठी जाती हैं और क्रिकेटर अपने देश के राजदूत माने जाते हैं। सच कहा जाए तो यह खेल भारत की एकता का प्रतीक बनकर उभरा है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि हमेशा से ऐसा नहीं था? इस अध्याय में आपको इसके लंबे और टेढ़े-मेढ़े सफ़र की एक झलक मिलेगी।

एक ज़माने में, करीब डेढ़ सौ साल पहले, क्रिकेट फ़िरंगी खेल था। इसका आविष्कार इंग्लैंड में हुआ और यह 19वीं सदी के विक्टोरियाई समाज और संस्कृति के रंग में रँग गया। इस खेल को अंग्रेज़ अपने तमाम प्रिय मूल्यों-बराबरी का न्याय, अनुशासन, शराफ़त (जेन्ट्लमैनलिनेस)-का वाहक मानते थे। क्रिकेट को स्कूलों में शारीरिक शिक्षा के वृहत्तर कार्यक्रम के तहत लगाया गया कि लड़के आदर्श नागरिक बन सकें। लड़कियों को लड़कों का खेल खेलने की इजाज़त नहीं थी। अंग्रेज़ों के साथ चलकर क्रिकेट उपनिवेशों में पहुँचा। औपनिवेशिक मालिकों ने सोचा कि खेल को इसके वाजिब अंदाज़, इसकी असली भावना के साथ सिर्फ़ वही खेल सकते हैं। लिहाज़ा जब उपनिवेश के गुलाम लोग क्रिकेट खेलने लगे और अकसर उनसे बेहतर खेलने लगे; इतना ही नहीं कई बार उन्हें हराने में भी सफल रहे, तो उन्हें गंभीर चिंता होने लगी। इस तरह क्रिकेट का खेल उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद की राजनीति से जुड़ गया।

उपनिवेशों के अंदर खेल का अपना इतिहास भी पेचीदा रहा। जैसा कि आप अध्याय 7 में देखेंगे, क्रिकेट जाति, क्षेत्र, समुदाय व राष्ट्र की राजनीति से जुड़ गया। राष्ट्रीय खेल के रूप में क्रिकेट का उभरना कई दशकों के ऐतिहासिक विकास का परिणाम था।

© NCERT not to be republished

क्रिकेट के बाद हम पहनावे की ओर बढ़ेंगे (अध्याय 8)। आप देखेंगे कि पहनावे के इतिहास से हमें विभिन्न समाजों के इतिहास के बारे कितना कुछ पता चलता है। लोग जो कपड़े पहनते हैं, उन पर समाज की रीति-नीतियों की छाप होती है। उनसे हमें सुंदरता, मर्यादा व उचित-अनुचित आचार-व्यवहार के उनके खयालात का पता चलता है। समाज के बदलने से ये रीतियाँ-नीतियाँ भी बदलती हैं। लेकिन समाज के रस्मों-रिवाज और पहनावे-ओढ़ावे में बदलाव के पीछे लंबी जद्दोजहद होती है। इनका एक इतिहास होता है, ये स्वाभाविक तौर पर, यूँ ही बस, हो नहीं जाते।

अध्याय 8 इसी इतिहास से आपका परिचय कराएगा। आप पढ़ेंगे कि इंग्लैंड व भारत में पहनावे में हुए बदलाव किस तरह इन देशों में चल रहे सामाजिक आंदोलनों और आर्थिक परिवर्तनों से प्रभावित हुए। आप एक बार फिर देखेंगे कि पहनावा भी उपनिवेशवादी व राष्ट्रवादी, जाति और वर्ग की राजनीति से किस गहराई से जुड़ा है। पहनावे के इतिहास पर थोड़ा गौर करें तो स्वदेशी की राजनीति व चरखे के प्रतीक में हमें नए अर्थ खुलते दिखेंगे। शायद इससे हमें महात्मा गांधी को भी बेहतर समझने का मौका मिले क्योंकि वह अकेले ऐसे इंसान थे, जो न सिर्फ कपड़ों की राजनीति के प्रति निहायत सजग थे, बल्कि उन्होंने इस पर जमकर लिखा भी।

अगर आप इन दो-एक चीज़ों के इतिहास को समझने लगें तो शायद अपनी ज़िंदगी के ऐसे पहलुओं का इतिहास खुद टटोलने लगेंगे जिन्हें अब तक आपने साधारण मानकर अनदेखा कर दिया था।

© NCERT not to be republished

इतिहास और खेल : क्रिकेट की कहानी

चित्र 1 – आज मौजूद सबसे पुराना बल्ला.
इसके मुड़े हुए सिरे को देखें जो हॉकी स्टिक जैसा लगता है।

क्रिकेट इंग्लैंड में 500 साल पहले अलग-अलग नियमों के तहत खेले जा रहे गेंद-डंडे के खेलों से पैदा हुआ। 'बैट' अंग्रेज़ी का एक पुराना शब्द है, जिसका सीधा अर्थ है 'डंडा' या 'कुंदा'। सत्रहवीं सदी में एक खेल के रूप में क्रिकेट की आम पहचान बन चुकी थी और यह इतना लोकप्रिय हो चुका था कि रविवार को चर्च न जाकर मैच खेलने के लिए इसके दीवानों पर जुर्माना लगाया जाता था। अठारहवीं सदी के मध्य तक बल्ले की बनावट हॉकी-स्टिक की तरह नीचे से मुड़ी होती थी। इसकी सीधी-सी वजह ये थी कि बॉल लुढ़का कर, अंडरआर्म, फेंकी जाती थी और बैट के निचले सिरे का घुमाव बल्लेबाज़ को गेंद से संपर्क साधने में मदद करता था।

इंग्लैंड के गाँवों से उठकर यह खेल कैसे और कब बड़े शहरों के विशाल स्टेडियम में खेला जानेवाला आधुनिक खेल बन गया, यह इतिहास का एक दिलचस्प विषय है, क्योंकि इतिहास का एक इस्तेमाल तो यही है कि वह हमें वर्तमान के बनने की कहानी बताए। खेल हमारी मौजूदा ज़िंदगी का एक अहम हिस्सा है-इसके ज़रिए हम अपना मनोरंजन करते हैं, एक दूसरे से होड़ लेते हैं, खुद को फ़िट रखते हैं और अपनी सामाजिक तरफ़दारी भी व्यक्त करते हैं। अगर आज के दिन लाखों-करोड़ों हिन्दुस्तानी सब-कुछ छोड़-छाड़कर भारतीय टीम को टेस्ट या एकदिवसीय मैच खेलते देखने में जुट जाते हैं तो यह जानना ज़रूरी लगता है कि दक्षिण-पूर्व इंग्लैंड में खोजा गया यह गेंद-डंडे का खेल आखिर भारतीय उपमहाद्वीप का जुनून कैसे बन गया। इस खेल की कहानी इसलिए भी दिलचस्प है क्योंकि एक ओर जहाँ उपनिवेशवाद व राष्ट्रवाद की बड़ी कहानी इससे जुड़ी है तो दूसरी ओर धर्म व जाति की राजनीति ने भी एक हद तक इसका स्वरूप गढ़ा।

क्रिकेट के इस इतिहास में पहले हम इंग्लैंड में इसके विकास को देखेंगे और उस समय प्रचलित शारीरिक चुस्ती व प्रशिक्षण की संस्कृति का भी जायज़ा लेंगे। तब हम भारत का रुख़ करते हुए क्रिकेट को यहाँ अपनाये जाने से लेकर इसमें हुए आधुनिक बदलावों तक की चर्चा करेंगे। हरेक खंड में हम देखेंगे कि खेल का इतिहास किस तरह सामाजिक इतिहास से नथा-गुँथा है।

चित्र 2 – लॉर्ड्स, इंग्लैंड क्रिकेट मैदान का एक चित्रकार द्वारा बनाया गया चित्र, 1821.

© NCERT not to be republished

1 इंग्लैंड में खेल के रूप में क्रिकेट का ऐतिहासिक विकास

अठारहवीं व उन्नीसवीं सदी के इंग्लैंड के सामाजिक और राजनीतिक इतिहास ने क्रिकेट को इसका अनोखा स्वरूप प्रदान किया, क्योंकि यह क्रिकेट का शुरुआती दौर था। मिसाल के तौर पर यह सिर्फ़ टेस्ट क्रिकेट का ही अजूबा है कि खेल पाँच दिन तक लगातार चले और कोई नतीजा न निकले। किसी भी अन्य आधुनिक खेल के खत्म होने में इससे आधा वक़्त भी नहीं लगता। फुटबॉल मैच करीब डेढ़ घंटे चलता है। गेंद व बल्ले से खेले जाने वाले बेसबॉल जैसे आधुनिक ज़माने के लिहाज़ से अपेक्षाकृत लंबे खेल में भी उतने समय में नौ पारियाँ हो जाती हैं जितने में क्रिकेट के लघु संस्करण, यानी एकदिवसीय मैच, की एक पारी हो पाती है।

क्रिकेट की एक और दिलचस्प ख़ासियत यह है कि पिच की लंबाई तो तय–22 गज़–होती है पर मैदान का आकार-प्रकार एक-सा नहीं होता। हॉकी, फुटबॉल जैसे दूसरे टीम-खेलों में मैदान के आयाम तय होते हैं, क्रिकेट में नहीं। ऐडीलेड ओवल की तरह मैदान अंडाकार हो सकता है, तो चेन्नई के चेपॉक की तरह लगभग गोल भी। मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड में छक्का होने के लिए गेंद को काफ़ी दूरी तय करनी पड़ती है, जबकि दिल्ली के फ़िरोज़शाह कोटला में थोड़े प्रयास में ही गेंद सीमा-रेखा के पार जाकर गिरती है।

इन दोनों अजूबों के पीछे ऐतिहासिक कारण हैं। क़ायदा-क़ानून से बँधने वाले खेलों में क्रिकेट का नंबर अव्वल था, यानी, सॉकर व हॉकी जैसे बाक़ी खेलों के मुक़ाबले में क्रिकेट ने सबसे पहले अपने लिए नियम बनाए और वर्दियाँ भी अपनाईं। 'क्रिकेट के क़ानून' पहले-पहल 1744 ई. में लिखे गए। उनके मुताबिक, "हाज़िर शरीफ़ों में से दोनों प्रिंसिपल (कप्तान) दो अंपायर चुनेंगे, जिन्हें किसी भी विवाद को निपटाने का अंतिम अधिकार होगा। स्टंप 22 इंच ऊँचे होंगे, उनके बीच की गिल्लियाँ 6 इंच की। गेंद का वज़न 5 से 6 औंस के बीच होगा और स्टंप के बीच की दूरी 22 गज़ होगी"। बल्ले के रूप व आकार पर कोई पाबंदी नहीं थी।

ऐसा लगता है कि 40 *नॉच* या रन का स्कोर काफ़ी बड़ा होता था, शायद इसलिए कि गेंदबाज़ तेज़ी से बल्लेबाज़ के नंगे, पैडरहित पिंडलियों पर गेंद फेंकते थे। दुनिया का पहला क्रिकेट क्लब हैम्बल्डन में 1760 के दशक में बना और मेरिलिबॉन क्रिकेट क्लब (एमसीसी) की स्थापना 1787 में हुई। इसके अगले साल ही एमसीसी ने क्रिकेट के

चित्र 3 – मेरिलिबॉन क्रिकेट क्लब (एमसीसी) का पैविलियन, 1874.

© NCERT not to be republished

नियमों में सुधार किए और उनका अभिभावक बन बैठा। एमसीसी के सुधारों से खेल के रंग-ढंग में ढेर सारे परिवर्तन हुए, जिन्हें 18वीं सदी के दूसरे हिस्से में लागू किया गया।

1760 व 1770 के दशक में ज़मीन पर लुढ़काने की जगह गेंद को हवा में लहराकर आगे पटकने का चलन हो गया था। इससे गेंदबाज़ों को गेंद की लंबाई का विकल्प तो मिला ही, वे अब हवा में चकमा भी दे सकते थे और पहले से कहीं तेज़ गेंदें फेंक सकते थे। इससे स्पिन और स्विंग के लिए नए दरवाज़े खुले। जवाब में बल्लेबाज़ों को अपनी टाइमिंग व शॉट चयन पर महारत हासिल करनी थी। एक नतीजा तो फ़ौरन यह हुआ कि मुड़े हुए बल्ले की जगह सीधे बल्ले ने ले ली। इन सबकी वजह से हुनर व तकनीक महत्वपूर्ण हो गए, जबकि ऊबड़-खाबड़ मैदान या शुद्ध ताकत की भूमिका कम हो गई।

गेंद का वज़न अब साढ़े पाँच से पौने छः औंस तक हो गया और बल्ले की चौड़ाई चार इंच कर दी गई। यह तब हुआ जब एक बल्लेबाज़ ने अपनी पूरी पारी विकेट जितने चौड़े बल्ले से खेल डाली! पहला लेग बिफ़ोर विकेट (पगबाधा) नियम 1774 में प्रकाशित हुआ। लगभग उसी समय तीसरे स्टंप का चलन भी हुआ। 1780 तक बड़े मैचों की अवधि तीन दिन की हो गई थी और इसी साल छः सीवन वाली क्रिकेट बॉल भी अस्तित्व में आई।

उन्नीसवीं सदी में ढेर सारे बदलाव हुए। वाइड बॉल का नियम लागू हुआ, गेंद का सटीक व्यास तय किया गया, चोट से बचाने के लिए पैड व दस्ताने जैसे हिफ़ाज़ती उपकरण उपलब्ध हुए, बाउंड्री की शुरुआत हुई, जबकि पहले हरेक रन दौड़ कर लेना पड़ता था, और सबसे अहम बात, ओवरआर्म बोलिंग कानूनी ठहरायी गई। पर अठारहवीं सदी में क्रिकेट पूर्व-औद्योगिक खेल रहा, जिसे परिपक्व होने के लिए औद्योगिक क्रांति, यानी 19वीं सदी के दूसरे हिस्से का इंतज़ार करना पड़ा। अपने इस ख़ास इतिहास के चलते क्रिकेट में भूत-वर्तमान दोनों की विशेषताएँ शामिल हैं।

क्रिकेट की ग्रामीण जड़ों की पुष्टि टेस्ट मैच की अवधि से भी हो जाती है। शुरू में क्रिकेट मैच की समय-सीमा नहीं होती थी। खेल तब तक चलता था जब तक एक टीम दूसरी को दोबारा पूरा आउट न कर दे। ग्रामीण ज़िंदगी की रफ़्तार धीमी थी और क्रिकेट के नियम औद्योगिक क्रांति से पहले बनाए गए थे। आधुनिक फ़ैक्ट्री का मतलब था कि लोगों को घंटे, दिहाड़ी या हफ़्ते के हिसाब से काम के पैसे मिलते थे: फुटबॉल या हॉकी जैसे खेलों की **संहिताएँ** औद्योगिक क्रांति के बाद बनीं, लिहाज़ा उनकी कठोर समय-सीमाएँ औद्योगिक शहरी ज़िंदगी के रूटीन को ध्यान में रखकर बनाई गईं।

उसी तरह क्रिकेट में मैदान के आकार का अस्पष्ट होना उसकी ग्रामीण शुरुआत का सबूत है। क्रिकेट मूलत: गाँव के *कॉमन्स* में खेला जाता था। कॉमन्स ऐसे सार्वजनिक और खुले मैदान थे जिनपर पूरे समुदाय का साझा हक़ होता था। कॉमन्स का आकार हरेक गाँव में अलग-अलग होता था, इसलिए न तो बाउंड्री तय थी और न ही चौके। जब गेंद भीड़ में घुस जाती

The LAWS of the NOBLE GAME of CRICKET.
as revised by the Club at St. Mary-le-bone.

THE BAT

THE STUMPS

THE BOWLING CREASE

THE POPPING CREASE

THE WICKETS

THE PARTY WHICH GOES FROM HOME

THE BOWLER

THE STRIKER IS OUT

THE WICKET KEEPERS

THE UMPIRES

BETS.

चित्र 4 – एमसीसी द्वारा निर्धारित और संशोधित होने वाले क्रिकेट के नियमों को इस रूप में नियमित रूप से प्रकाशित किया जाता था। बल्लेबाज़ी के नियमों को भी औपचारिक रूप से तय किया जाता था.

नए शब्द

संहिता : स्पष्ट रूप से निर्धारित नियमों और कानूनों को औपचारिक रूप में सूत्रबद्ध कर देना।

© NCERT not to be republished

तो लोग क्षेत्ररक्षक या फ़ील्डर के लिए रास्ता बना देते थे, ताकि वह आकर गेंद वापस ले जाए। जब सीमा-रेखा क्रिकेट की नियमावली का हिस्सा बनी तब भी, विकेट से उसकी दूरी तय नहीं की गई। नियम सिर्फ़ यह कहता है कि 'अंपायर दोनों कप्तानों से सलाह कर के खेल के इलाके की सीमा तय करेगा।'

खेल के औज़ारों को देखें तो पता चलता है कि वक्त के साथ बदलने के बावजूद क्रिकेट अपनी ग्रामीण इंग्लैंड की जड़ों के प्रति वफ़ादार रहा। क्रिकेट के सबसे ज़रूरी उपकरण प्रकृति में उपलब्ध पूर्व-औद्योगिक सामग्री से बनते हैं। बल्ला, स्टंप व गिल्लियाँ लकड़ी से बनती हैं, जबकि गेंद चमड़े, सुतली (ट्वाइन) और काग (कॉर्क) से। आज भी बल्ला और गेंद हाथ से ही बनते हैं, मशीन से नहीं। बल्ले की सामग्री अलबत्ता वक्त के साथ बदली। किसी ज़माने में इसे लकड़ी के एक साबुत टुकड़े से बनाया जाता था। लेकिन अब इसके दो हिस्से होते हैं – ब्लेड या फट्टा जो *विलो* (बैद) नामक पेड़ से बनता है और हत्था जो बेंत से बनता है। बेंत तब जाकर उपलब्ध हुई जब यूरोपीय उपनिवेशकारों व कंपनियों ने खुद को एशिया में जमाया। गोल्फ़ और टेनिस के विपरीत, क्रिकेट ने प्लास्टिक, फ़ायबर-शीशा या धातु-जैसी औद्योगिक या कृत्रिम सामग्री के इस्तेमाल को सिरे से नकारा है। जब ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटर डेनिस लिली ने एल्युमीनियम के बल्ले से खेलने की कोशिश की तो अंपायरों ने उसे अवैध करार दिया।

दूसरी ओर हिफ़ाज़ती साज़-सामान पर तकनीकी बदलाव का सीधा असर पड़ा है। वल्केनाइज़्ड रबड़ की खोज के बाद पैड पहनने का रिवाज 1848 में चला, जल्द ही दस्ताने भी बने और धातु, सिन्थेटिक व हल्की सामग्री से बने हेल्मेट के बिना तो आधुनिक क्रिकेट की कल्पना ही असंभव है।

चित्र 5 – इस पोस्टर में लॉर्ड्स में 1848 में होने वाले एक मैच का ऐलान किया जा रहा है.
पोस्टर में शौकिया और पेशेवर खिलाड़ियों को 'जेंटलमेन' और 'प्लेयर्स' कह कर संबोधित किया गया है। उन्नीसवीं शताब्दी में होने वाले मैचों के विज्ञापन रंगमंच के पोस्टरों जैसे लगते थे और उनसे इस खेल के नाटकीय स्वरूप का पता चलता है।

चित्र 6 – महान बल्लेबाज़ डब्ल्यू. जी. ग्रेस बल्लेबाज़ी के लिए आते हुए, लॉर्ड्स, 1895.
वह प्लेयर्स के खिलाफ़ जेंटलमेन के लिए खेलते थे।

© NCERT not to be republished

1.1 क्रिकेट और विक्टोरियाई इंग्लैंड

इंग्लैंड में क्रिकेट के आयोजन पर अंग्रेज़ी समाज की छाप साफ़ है। अमीरों को, जो मज़े के लिए क्रिकेट खेलते थे, 'शौकिया' खिलाड़ी कहा गया और अपनी रोज़ी-रोटी के लिए खेलनेवाले गरीबों को 'पेशेवर' (प्रोफ़ेशनल) कहा गया। अमीर शौक़िया दो कारणों से थे: एक, यह खेल उनके लिए एक तरह का मनोरंजन था – खेलने के आनंद के लिए न कि पैसे के लिए खेलना नवाबी ठाठ की निशानी था। दूसरे, खेल में अमीरों को लुभा सकने लायक पैसा भी नहीं था। पेशेवर खिलाड़ियों का मेहनताना वज़ीफ़ा, **चंदे**, या गेट पर इकट्ठा किए गए पैसे से दिया जाता था। मौसमी होने के कारण खेल से साल भर का रोज़गार तो नहीं मिल सकता था। जाड़े के महीनों, यानी ऑफ़-सीज़न में, ज़्यादातर पेशेवर खिलाड़ी खदानों में काम करते थे या कहीं और मज़दूरी करते थे।

शौकीनों की सामाजिक श्रेष्ठता क्रिकेट की परंपरा का हिस्सा बन गई। शौक़ीनों को जहाँ 'जेंट्लमेन' की उपाधि दी गई तो पेशेवरों को 'खिलाड़ी' ('प्लेयर्स') का अदना-सा नाम मिला। मैदान में घुसने के उनके प्रवेश-द्वार भी अलग-अलग थे। शौकीन जहाँ बल्लेबाज़ हुआ करते वहीं खेल में असली मशक्कत और ऊर्जा वाले काम, जैसे तेज़ गेंदबाज़ी, खिलाड़ियों के

नए शब्द

चंदा : किसी खास उद्देश्य (जैसे क्रिकेट) के लिए इकट्ठा की जाने वाली राशि या मदद।

स्रोत क

टॉमस ह्यूज़ (1822-1896) ने उस समय रग्बी स्कूल में पढ़ाई की थी जिस समय थॉमस आर्नल्ड वहाँ के प्रधानाचार्य थे। अपने स्कूली अनुभवों के आधार पर उन्होंने एक उपन्यास लिखा जिसका शीर्षक था – *टॉम ब्राउन्स स्कूलडेज़।* 1857 में छपी यह किताब काफ़ी लोकप्रिय हुई और उससे बाहुबली ईसाइयत (मस्क्युलर क्रिश्चिऐनिटी) के प्रसार में मदद मिली। ईसाई धर्म की इस धारा का मानना था कि स्वस्थ नागरिकों को ईसाई आदर्शों और खेलों के ज़रिए ढाला जाना चाहिए।

इस पुस्तक में टॉम ब्राउन, घर की याद में खोए रहने वाले और मुर्झाए से लड़के की जगह एक कद्दावर, मर्दाना विद्यार्थी बन जाता है। उसे नायकों जैसी ख्याति मिलती है और शारीरिक साहस, खिलाड़ीपन, वफ़ादारी और देशभक्ति की भावना के लिए सब उसकी चर्चा करते हैं। यह रूपांतरण उस पब्लिक स्कूल के अनुशासन और खेल संस्कृति से पैदा होता है।

इसी उपन्यास के अंश

'चलो, ब्राउन, अब अपने व्यंग्य-बाण मत मारो', मास्टर ने कहा। 'मैंने इस खेल को वैज्ञानिक ढंग से समझना शुरू कर दिया है और क्या शालीन खेल है यह!'

'है कि नहीं? लेकिन यह सिर्फ़ खेल नहीं है', टॉम ने कहा।

'बिलकुल', आर्थर ने कहा, 'ब्रिटिश जवानों से लेकर बूढ़ों का जन्मसिद्ध अधिकार जैसे कि बंदी प्रत्यक्षीकरण और प्रक्रिया-सम्मत न्याय हर ब्रिटिश का हक़ है।'

'इससे हमें अनुशासन और पारस्परिक निर्भरता की जो सीख मिलती है, वह अनमोल है', मास्टर ने कहना जारी रखा, 'मुझे लगता है कि इस खेल को इतना ही नि:स्वार्थी होना चाहिए। यहाँ व्यक्ति एकादश में मिल जाता है; वह इसलिए नहीं खेलता कि वह जीते, बल्कि उसकी टीम जीते।'

'यह बिलकुल सही है', टॉम ने कहा, 'और इसीलिए फ़ुटबाल और क्रिकेट पुराने पारंपरिक खेलों के मुक़ाबले ज़्यादा लोकप्रिय हैं। क्योंकि बाकी खेलों में इंसान अपनी जीत के लिए खेलता है न कि अपने पक्ष की जीत के लिए।'

'फिर एकादश के कप्तान के क्या कहने!' मास्टर ने कहा, 'हमारी स्कूली दुनिया में कैसी गरिमा है इस पद की!... इसके लिए हुनर भी चाहिए, भद्रता और सख्ती भी, और न जाने कितने सारे और गुण।'

टॉमस ह्यूज़, *टॉम ब्राउन्स स्कूलडेज़* से उद्धृत।

© NCERT not to be republished

हिस्से आते थे। क्रिकेट में संदेह का लाभ (बेनेफ़िट ऑफ़ डाउट) हमेशा बल्लेबाज़ को क्यों मिलता है, उसकी एक वजह यह भी है। क्रिकेट बल्लेबाज़ों का ही खेल इसीलिए बना क्योंकि नियम बनाते समय बल्लेबाज़ी करनेवाले 'जेंटलमेन' को तरजीह दी गई। शौक़िया खिलाड़ियों की सामाजिक श्रेष्ठता का ही नतीजा था कि टीम का कप्तान पारंपरिक तौर पर बल्लेबाज़ ही होता था: इसलिए नहीं कि बल्लेबाज़ कुदरती तौर पर बेहतर कप्तान होते थे, बल्कि इसलिए कि बल्लेबाज़ तो आम तौर पर 'जेंटलमेन' ही होते थे। चाहे क्लब की टीम हो या राष्ट्रीय टीम, कप्तान तो शौक़िया खिलाड़ी ही होता था। 1930 के दशक में जाकर पहली बार अंग्रेज़ी टीम की कप्तानी किसी पेशेवर खिलाड़ी–यॉर्कशायर के बल्लेबाज़ लेन हटन–ने की।

अकसर कहा जाता है कि 'वाटरलू का युद्ध ईटन के खेल के मैदान में जीता गया'। इसका अर्थ यह है कि ब्रिटेन की सैनिक सफलता का राज़ उसके पब्लिक स्कूल के बच्चों को सिखाए गए मूल्यों में था। अंग्रेज़ी आवासीय विद्यालय में अंग्रेज़ लड़कों को शाही इंग्लैंड के तीन अहम संस्थानों–सेना, प्रशासनिक सेवा व चर्च में करियर के लिए प्रशिक्षित किया जाता था। उन्नीसवीं सदी की शुरुआत तक टॉमस आर्नल्ड–जो मशहूर रग्बी स्कूल के हेडमास्टर होने के साथ-साथ आधुनिक पब्लिक स्कूल प्रणाली के प्रणेता थे–रग्बी व क्रिकेट जैसे खेलों को महज़ मैदानी खेल नहीं मानते थे बल्कि अंग्रेज़ लड़कों को अनुशासन, ऊँच-नीच का बोध, हुनर, स्वाभिमान की रीति-नीति और नेतृत्व क्षमता सिखाने का ज़रिया मानते थे। इन्हीं गुणों पर तो ब्रितानी साम्राज्य को बनाने और चलाने का दारोमदार था। विक्टोरियाई साम्राज्य-निर्माता दूसरे देशों को जीतना नि:स्वार्थ समाज सेवा मानते थे, क्योंकि उनसे हारने के बाद ही तो पिछड़े समाज ब्रितानी कानून व पश्चिमी ज्ञान के संपर्क में आकर सभ्यता का सबक सीख सकते थे। क्रिकेट ने अभिजात अंग्रेज़ों की इस आत्मछवि को पुष्ट करने में मदद की–ऐसा शौकिया खेल को बतौर आदर्श पेश करके हुआ, यानी खेल जहाँ फ़ायदे या जीत के लिए न होकर सिर्फ़ खेलने और स्पिरिट ऑफ़ फ़ेयरप्ले (न्यायोचित खेल भावना) के लिए खेला जाता था।

सच्ची बात तो यह है कि नेपोलियन के खिलाफ़ लड़ाई इसलिए जीती जा सकी कि स्कॉटलैंड व वेल्स के लौह उद्योग, लंकाशायर की मिलों व सिटी ऑफ़ लंदन के वित्तीय घरानों से भरपूर सहयोग मिला। इंग्लैंड के व्यापार व उद्योग में आगे होने के चलते ब्रिटेन विश्व की सबसे बड़ी ताकत बन गया था, लेकिन अंग्रेज़ी शासक-वर्ग को यही खयाल अच्छा लगता था कि दुनिया में उनकी श्रेष्ठता के पीछे आवासीय विद्यालयों में पढ़कर तैयार हुए और शरीफ़ों का खेल-क्रिकेट-खेलनेवाले युवावर्ग का चरित्र ही है।

THE ILLUSTRATED LONDON NEWS

No. 1715.—VOL. LXI. SATURDAY, JULY 20, 1872.

चित्र 7 – लॉर्ड्स पर ईटन और हैरो नामक मशहूर पब्लिक स्कूलों के बीच क्रिकेट का मैच.
यह खेल तो सब जगह एक जैसा लगता है लेकिन उसको देखने के लिए जुटने वाली भीड़ एक जैसी नहीं होती। बाऊलर टोपियाँ पहने पुरुष और धूप से बचने के लिए पैरासोल पहने मैच देखने आयी औरतों के चित्रण से इस खेल का उच्चवर्गीय सामाजिक चरित्र साफ़ दिखाई देता है। इलस्ट्रेटेड लंदन न्यूज़, 20 जुलाई 1872 से।

चित्र 8 – औरतों के लिए क्रिकेट नहीं बल्कि क्रोकेट.
औरतों के लिए कठिन और प्रतिस्पर्धी खेल अच्छा नहीं माना जाता था। क्रोकेट एक धीमी गति वाला सौम्य खेल था जिसे औरतों के लिए, खासतौर से उच्चवर्गीय औरतों के लिए अच्छा माना जाता था। खिलाड़िनों के लंबे गाउन, झालरों और टोपियों से उनके खेलों के स्वरूप की झलक मिलती है। इलस्ट्रेटेड लंदन न्यूज़, 20 जुलाई 1872 से।

स्रोत ख

उन्नीसवीं सदी के आखिरी सालों तक खेल-कूद और व्यायाम लड़कियों की शिक्षा का हिस्सा नहीं था। 1858 से 1906 तक चेलटेनहेम लेडीज़ कॉलेज की प्रधानाचार्या रही डोरोथी बीएले ने स्कूल के जाँच आयोग को बताया था :

'लड़कों को क्रिकेट आदि खेलों से जो शारीरिक व्यायाम मिलता है उसके स्थान पर लड़कियों के लिए पैदल चाल और ... कूदने आदि की व्यवस्था की जानी चाहिए।'

कैथलीन, ई. मैक्क्रॉने, *'प्ले अप! प्ले अप! ऐण्ड प्ले द गेम : स्पोर्ट ऐट द लेट विक्टोरियन गर्ल्स पब्लिक स्कूल'* से उद्धृत।

1890 के दशक तक पहुँचते-पहुँचते स्कूल को खेल के मैदान आदि मिलने लगे और लड़कियों को भी उन खेलों में हाथ आज़माने का मौका मिलने लगा जिन्हें अब तक केवल लड़कों का खेल माना जाता था। लेकिन लड़कियों से प्रतिस्पर्धात्मक खेल की उम्मीद अब भी नहीं की जाती थी। डोरोथी बीएले ने 1893-1894 में स्कूल परिषद् को बताया :

'मैं मानती हूँ कि लड़कियों को अपने शरीर पर ज़रूरत से ज़्यादा ज़ोर नहीं डालना चाहिए और न ही उन्हें ऐथलेटिक प्रतिद्वंद्विता में डूब जाना चाहिए। इसीलिए, हम दूसरे स्कूलों के विरुद्ध नहीं खेलते। मेरे खयाल में लड़कियों को ऊबड़-खाबड़ मैदानों में खुद को थकाने के बजाय वनस्पति शास्त्र, भूगर्भशास्त्र आदि में ही दिलचस्पी लेनी चाहिए।'

कैथलीन, ई. मैक्क्रॉने, *'प्ले अप! प्ले अप! ऐण्ड प्ले द गेम'* से उद्धृत।

क्रियाकलाप

उन्नीसवीं सदी के स्कूली पाठ्यक्रम के आधार पर उस समय लड़कियों के लिए कैसा आचरण सही माना जाता था?

2 क्रिकेट का प्रसार

हॉकी व फुटबॉल जैसे टीम-खेल तो अंतर्राष्ट्रीय बन गए, पर क्रिकेट औपनिवेशिक खेल ही बना रहा, यानी यह उन्हीं देशों तक सीमित रहा जो कभी ब्रिटिश साम्राज्य के अंग थे। क्रिकेट की पूर्व-औद्योगिक विचित्रता के कारण इसका निर्यात होना मुश्किल था। इसने उन्हीं देशों में जड़ें जमायीं जहाँ अंग्रेज़ों ने कब्ज़ा जमाकर शासन किया। इन उपनिवेशों (जैसे कि दक्षिण अफ़्रीका, ज़िम्बाब्वे, ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, वेस्ट इंडीज़ और कीनिया) में क्रिकेट इसलिए लोकप्रिय खेल बन पाया क्योंकि गोरे बाशिंदों ने इसे अपनाया या फिर जहाँ स्थानीय अभिजात वर्ग ने अपने औपनिवेशिक मालिकों की आदतों की नकल करने की कोशिश की, जैसे कि भारत में।

हालाँकि ब्रिटिश शाही अफ़सर उपनिवेशों में यह खेल लेकर ज़रूर आए पर इसके प्रसार के लिए, खास तौर पर वेस्ट इंडीज़ व हिंदुस्तान जैसे ग़ैर-गोरे उपनिवेशों में, उन्होंने शायद ही कोई प्रयास किया। क्रिकेट खेलना यहाँ सामाजिक व नस्ली श्रेष्ठता का प्रतीक बन गया और अफ़्रीकी-कैरिबियाई आबादी को क्लब क्रिकेट खेलने से हमेशा हतोत्साहित किया गया। नतीजतन, इस पर गोरे बागान-मालिकों और उनके नौकरों का बोलबाला रहा। वेस्ट इंडीज़ में पहला गैर-गोरा क्लब उन्नीसवीं सदी के अंत में बना और यहाँ भी सदस्य हल्के रंगवाले **मुलैट्टो** समुदाय के थे। इस तरह काले रंग के लोग समुद्री बीचों पर, सुनसान गलियों और पार्कों में बड़ी संख्या में

चित्र 9 - औपनिवेशिक भारत के मैदानों में दोपहर बाद टेनिस.
यहाँ चित्रकार ने यह दर्शाने का प्रयास किया है कि यह खेल मनोरंजन और व्यायाम, दोनों लिहाज़ से उपयोगी था। औरत-मर्द प्रतिस्पर्धा के लिए नहीं बल्कि मनोरंजन के लिए साथ-साथ खेल सकते थे। ग्राफ़िक, फरवरी 1880 से।

चित्र 10 - हिमालय की पृष्ठभूमि में मौज-मस्ती के लिए चल रहा खेल.
इस तस्वीर में पैविलियन के आसपास खड़े नौकरों के अलावा शायद और कोई भारतीय नहीं है।

नए शब्द

मुलैट्टो : मिश्रित यूरोपीय और अफ़्रीकी मूल के लोग।

क्रिकेट खेलते थे, लेकिन क्लब क्रिकेट पर 1930 के दशक तक गोरे अभिजनों का ही वर्चस्व रहा।

वेस्ट इंडीज़ में अभिजात गोरों की विशिष्टतावादी नीतियों के बावजूद कैरिबियाई द्वीप समूह में क्रिकेट महालोकप्रिय हो गया। क्रिकेट में कामयाबी का मतलब नस्ली समानता व राजनीतिक प्रगति हो गया। अपनी आज़ादी के समय, फ़ोर्ब्स बर्नहैम व एरिक विलियम्स जैसे नेताओं ने क्रिकेट में आत्मसम्मान और अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा की संभावनाएँ देखीं। जब वेस्ट इंडीज़ ने 1950 के दशक में इंग्लैंड के खिलाफ़ अपनी पहली टेस्ट शृंखला जीती तो राष्ट्रीय उत्सव मनाया गया, मानो वेस्ट इंडियनों ने दिखा दिया हो कि वे गोरे अंग्रेज़ों से कम नहीं हैं। इस महान जीत में दो विडंबनाएँ थीं। पहली, विजयी वेस्ट इंडीज़ की टीम का कप्तान एक गोरा ही था। याद रहे कि 1960 में पहली बार किसी अश्वेत– फ़्रैन्क वॉरेल – को नेतृत्व सँभालने का मौका मिला। दूसरी, वेस्ट इंडीज़ की टीम किसी एक देश की नहीं थी, बल्कि उसमें कई **डोमीनियनों** के खिलाड़ी शामिल थे और ये राज्य बाद में स्वतंत्र देश बने। मज़ेदार बात है कि कैरिबियाई क्षेत्र की नुमाइंदगी करनेवाली वेस्ट इंडियन टीम, वेस्ट इंडियन एकता के तमाम असफल प्रयासों का एकमात्र अपवाद है।

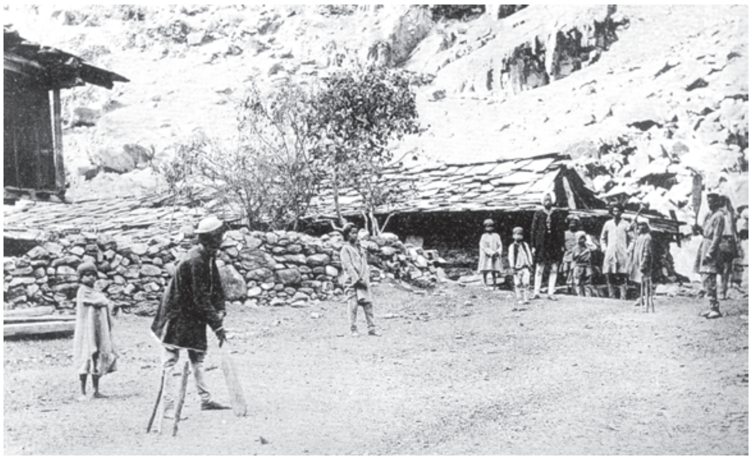

चित्र 11 – हिमालय के एक गाँव में लोग कामचलाऊ अंदाज़ में क्रिकेट खेल रहे हैं (1894).
चित्र 10 के विपरीत यहाँ खिलाड़ी हाथ की बनी विकेटों और बल्लों से ही खेल रहे हैं। उन्होंने लकड़ी के सामान्य टुकड़ों को ही काट-छाँट कर ये उपकरण बनाए हैं।

क्रिकेट के फ़ैन जानते हैं कि क्रिकेट देखने का मतलब ही है कि आप किसी न किसी ओर से हैं। रणजी ट्रॉफ़ी मैच में जब दिल्ली का मुंबई से मुक़ाबला हो तो दर्शक की वफ़ादारी इस पर निर्भर करती है कि वह किस शहर का है या वह किसका साथ दे रहा है। जब भारत बनाम पाकिस्तान हो तो भोपाल या चेन्नई में टेलीविज़न पर मैच देखते दर्शकों की भावनाएँ राष्ट्रीय निष्ठाओं से तय होती हैं। लेकिन भारतीय प्रथम श्रेणी क्रिकेट के शुरुआती इतिहास में टीमों को भौगोलिक आधारों पर नहीं बाँटा जाता था – बल्कि यह जानना दिलचस्प है कि 1932 के पहले किसी टीम को टेस्ट मैच में राष्ट्रीय नुमाइंदगी का अधिकार नहीं मिला था। तो टीमें बनती कैसे थीं और राष्ट्रीय और क्षेत्रीय टीमों के नहीं होने की स्थिति में फ़ैन अपनी तरफ़दारी कैसे तय करते थे? आइए देखें कि इतिहास के पास इन सवालों के क्या जवाब हैं—देखें कि भारत में क्रिकेट कैसे पनपा और कौन-सी वफ़ादारियाँ ब्रितानी राज के ज़माने में हिंदुस्तानियों को साथ ला रही थीं और कौन उन्हें बाँट रही थीं।

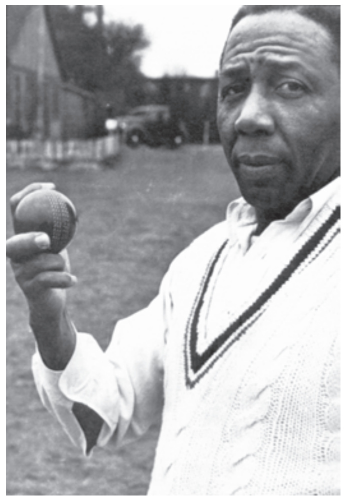

चित्र 12 – लैरी कॉन्स्टैंटाइन.
वेस्ट इंडीज़ के विश्व प्रसिद्ध खिलाड़ियों में से एक।

2.2 क्रिकेट, नस्ल और धर्म

औपनिवेशिक भारत में क्रिकेट नस्ल व धर्म के आधार पर संगठित था। भारत में क्रिकेट का पहला सबूत हमें 1721 से मिला है, जो अंग्रेज़ जहाज़ियों द्वारा कैम्बे में खेले गए मैच का ब्यौरा है। पहला भारतीय क्लब,

नए शब्द

डोमीनियन : ब्रिटिश साम्राज्य के अंतर्गत आने वाले स्वशासित क्षेत्र।

© NCERT not to be republished

कलकत्ता क्लब, 1792 में बना। पूरी अठारहवीं सदी में क्रिकेट भारत में ब्रिटिश सैनिक व सिविल सर्वेंट्स द्वारा सिर्फ़-गोरे क्लबों व जिमखानों में खेला जानेवाला खेल रहा। इन क्लबों की निजी चहारदीवारियों के अंदर क्रिकेट खेलने में मज़ा तो था ही, यह अंग्रेज़ों के भारतीय प्रवास के खतरों व मुश्किलों से राहत व पलायन का सामान भी था। हिंदुस्तानियों में इस खेल के लिए ज़रूरी हुनर की कमी समझी जाती थी, न ही उनसे खेलने की उम्मीद की जाती थी। लेकिन वे खेले।

हिंदुस्तानी क्रिकेट-यानी हिंदुस्तानियों द्वारा क्रिकेट-की शुरुआत का श्रेय बम्बई के ज़रतुश्तियों यानी पारसियों के छोटे से समुदाय को जाता है। व्यापार के चलते सबसे पहले अंग्रेज़ों के संपर्क में आए और पश्चिमीकृत होनेवाले पहले भारतीय समुदाय के रूप में पारसियों ने 1848 में पहले क्रिकेट क्लब की स्थापना बम्बई में की, जिसका नाम था-ओरिएंटल क्रिकेट क्लब। पारसी क्लबों के प्रायोजक व वित्तपोषक थे टाटा व वाडिया जैसे पारसी व्यवसायी। क्रिकेट खेलने वाले गोरे प्रभुवर्ग ने उत्साही पारसियों की कोई मदद नहीं की। उल्टे, गोरों के बॉम्बे जिमखाना क्लब और पारसी क्रिकेटरों के बीच पार्क के इस्तेमाल को लेकर एक झगड़ा भी हुआ। पारसियों ने शिकायत की कि बॉम्बे जिमखाना के पोलो टीम के घोड़ों द्वारा रौंदे जाने के बाद मैदान क्रिकेट खेलने लायक नहीं रह गया। जब ये साफ़ हो गया कि औपनिवेशिक अधिकारी अपने देशवासियों का पक्ष ले रहे हैं, तो पारसियों ने क्रिकेट खेलने के लिए अपना खुद का जिमखाना बनाया। पर पारसियों व नस्लवादी बॉम्बे जिमखाना के बीच की इस स्पर्धा का अंत अच्छा हुआ-पारसियों की एक टीम ने बॉम्बे जिमखाना को 1889 में हरा दिया। यह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के चार साल बाद हुआ, और दिलचस्प बात यह है कि इस संस्था के मूल नेताओं में से एक दादाभाई नौरोजी, जो अपने वक्त के महान राजनेता व बुद्धिजीवी थे, पारसी ही थे।

चित्र 13 - पारसी टीम, पहली भारतीय क्रिकेट टीम जिसने 1886 में इंग्लैंड का दौरा किया. परंपरागत क्रिकेट पोशाक के साथ वे पारसी टोपी भी पहने हुए हैं।

पारसी जिमखाना क्लब की स्थापना ने जैसे एक नई परंपरा डाल दी, दूसरे भारतीयों ने भी धर्म के आधार पर क्लब बनाने चालू कर दिए। हिंदू व मुसलमान दोनों ही 1890 के दशक में हिंदू व इस्लाम जिमखाना के लिए पैसे इकट्ठे करते दिखाई दिए। ब्रिटिश औपनिवेशिक भारत को राष्ट्र नहीं मानते थे-उनके लिए तो यह जातियों, नस्लों व धर्मों के लोगों का एक समुच्चय था, जिन्हें उन्होंने उपमहाद्वीप के स्तर पर एकीकृत किया। 19वीं सदी के अंत में कई हिंदुस्तानी संस्थाएँ व आंदोलन जाति व धर्म के आधार पर ही बने क्योंकि औपनिवेशिक सरकार भी इन बँटवारों को बढ़ावा देती थी-सामुदायिक संस्थाओं को फ़ौरन मान्यता मिल जाती थी। मिसाल के तौर पर, इस्लाम जिमखाना द्वारा बम्बई के समुद्री

इलाके के पास वाली ज़मीन की अर्ज़ी पर विचार करते हुए बॉम्बे प्रेसिडेंसी के गवर्नर ने लिखा: '... हमें मानकर चलना चाहिए कि बहुत जल्द हमारे पास किसी हिंदू जिमखाना के लिए ऐसी ही अर्ज़ी आएगी... इन अर्ज़ियों को नामंज़ूर करने का कोई उपाय मेरे पास नहीं है, लेकिन मैं ... हर *राष्ट्रीयता* के जिमखाने की स्थापना के बाद... आगे के आवेदनों को स्वीकार नहीं करूँगा'। (ज़ोर हमारा)। इस पत्र से ज़ाहिर है कि औपनिवेशिक अफ़सर हरेक धार्मिक समुदाय को अलग राष्ट्रीयता मानते थे। यह भी साफ़ है कि धार्मिक प्रतिनिधित्व के नाम पर स्वीकृति की गुंजाइश ज़्यादा थी।

जिमखाना क्रिकेट के इतिहास ने प्रथम श्रेणी के क्रिकेट को सांप्रदायिक व नस्ली आधारों पर संगठित करने की रिवायत डाली। औपनिवेशिक हिंदुस्तान में सबसे मशहूर क्रिकेट टूर्नामेंट खेलनेवाली टीमें क्षेत्र के आधार पर नहीं बनती थीं, जैसा कि आजकल रणजी ट्रॉफी में होता है, बल्कि धार्मिक समुदायों की बनती थीं। इस टूर्नामेंट को शुरू-शुरू में क्वाड्रैंग्युलर या चतुष्कोणीय कहा गया, क्योंकि इसमें चार टीमें-यूरोपीय, पारसी, हिंदू व मुसलमान - खेलती थीं। बाद में यह पेंटांग्युलर या पाँचकोणीय हो गया-और द रेस्ट नाम की नई टीम में भारतीय ईसाई जैसे बचे-खुचे समुदायों को नुमाइंदगी दी गई। मिसाल के तौर पर विजय हज़ारे, जो ईसाई थे, द रेस्ट के लिए खेलते थे।

पत्रकारों, क्रिकेटरों व राजनेताओं ने 1930-40 के दशक तक इस पाँचकोणीय टूर्नामेंट की नस्लवादी व सांप्रदायिक बुनियाद पर सवाल उठाने शुरू कर दिए थे। *बॉम्बे क्रॉनिकल* नामक अखबार के मशहूर संपादक एस.ए. बरेलवी, रेडियो कमेंटेटर ए.एफ़.एस. तलयारखान और भारत के सबसे लोकप्रिय राजनेता महात्मा गांधी ने पेंटांग्युलर को समुदाय के आधार पर बाँटनेवाला बताकर इसकी निंदा की। उनका कहना था ऐसे समय में जब राष्ट्रवादी हिंदुस्तानी अवाम को एकजुट करना चाह रहे थे, इस टूर्नामेंट का क्या तुक था? इसके विपरीत क्षेत्र-आधारित नैशनल क्रिकेट चैंपियनशिप नामक एक नए टूर्नामेंट का आयोजन शुरू हुआ (जिसे बाद में रणजी ट्रॉफ़ी कहा गया), लेकिन पाँचकोणीय टूर्नामेंट की जगह लेने के लिए इसे आज़ादी का इंतज़ार करना पड़ा। पाँचकोणीय टूर्नामेंट की नींव में ब्रितानी सरकार की 'फूट डालो राज करो' की नीति थी। यह एक औपनिवेशिक टूर्नामेंट था, जो ब्रिटिश राज के साथ खत्म हो गया।

बॉक्स 1

जाति और क्रिकेट

पालवंकर बालू का जन्म 1875 में पूना में हुआ था। उस समय भारतीयों को टेस्ट क्रिकेट नहीं खेलने दिया जाता था। इसके बावजूद बालू धीमी गति की गेंदबाजी में अपने समय के बेहतरीन गेंदबाज थे। बालू औपनिवेशिक काल के सबसे बड़े भारतीय क्रिकेट मुकाबले क्वाड्रैंग्युलर में हिंदूज़ टीम की तरफ़ से खेलते थे। अपनी टीम का सबसे अच्छा खिलाड़ी होते हुए भी उन्हें कभी कप्तान नहीं बनाया गया क्योंकि वह दलित थे और सवर्ण चयनकर्ता उनके विरुद्ध पक्षपात करते थे। आगे चलकर 1923 में, उनके छोटे भाई वि्टठल को हिंदूज़ टीम की कप्तानी का मौका मिला और यूरोपीय खिलाड़ियों के खिलाफ़ कई सफलताओं में उन्होंने अपनी टीम का नेतृत्व किया। एक अखबार के नाम भेजे गए पत्र में क्रिकेट के एक प्रशंसक ने हिंदूज़ टीम की जीत और 'अस्पृश्यता' के विरुद्ध गांधीजी द्वारा चलाए जा रहे अभियान को एक-दूसरे से जोड़ते हुए लिखा था :

'हिंदूज़ की शानदार विजय का श्रेय मुख्य रूप से इस बात को जाता है कि हिंदू जिमखाना के कर्ताधर्ताओं ने देश के बेहतरीन गेंदबाज़ श्री बालू के भाई श्री विट्ठल को हिंदूज़ टीम का कप्तान नियुक्त किया है जो कि अछूत वर्ग से आते हैं। हिदूज़ की जीत से यही सबक निकलता है कि छुआछूत के खात्मे से ही स्वराज का रास्ता खुलेगा-जो महात्मा जी की भी भविष्यवाणी है।'

रामचंद्र गुहा, *ए कॉर्नर ऑफ ए फ़ॉरेन फ़ील्ड*।

चित्र 14 - पालवंकर बालू (1904).
अभूतपूर्व खेल योग्यता के धनी बालू को टीम से बाहर तो नहीं रखा जा सकता था लेकिन दलित जाति से होने के कारण उन्हें कभी टीम का कप्तान नहीं बनाया गया।

© NCERT not to be republished

3 खेल के आधुनिक बदलाव

आधुनिक क्रिकेट में टेस्ट और एकदिवसीय इंटरनैशनल का वर्चस्व है, जिन्हें राष्ट्रीय टीमों के बीच खेला जाता है। मशहूर होकर लोगों की यादों में रच-बस जानेवाले क्रिकेटर आम तौर पर अपनी राष्ट्रीय टीमों के खिलाड़ी होते हैं। पाँचकोणीय और चतुष्कोणीय मैचों के दौर से उन्हीं खिलाड़ियों को हिंदुस्तानी फ़ैन याद करते हैं, जिन्हें टेस्ट क्रिकेट खेलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अपने समय के बेहतरीन बल्लेबाज़ सी.के. नायडू को तो लोग अब भी याद करते हैं, जबकि पालवंकर विट्ठल व पालवंकर बालू जैसे उनके कुछ अन्य समकालीन इसलिए भुला दिए गए हैं, क्योंकि नायडू का करियर तो लंबा था पर ये दोनों खिलाड़ी टेस्ट क्रिकेट खेलने के वक्त तक सक्रिय

स्रोत घ

महात्मा गांधी और औपनिवेशिक खेल

महात्मा गांधी देह और दिमाग के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए खेल-कूद को बहुत महत्वपूर्ण मानते थे। लेकिन वह यह बात भी अकसर कहते थे कि क्रिकेट और हॉकी जैसे खेल अंग्रेज़ भारत में लेकर आए हैं और ये खेल हमारे परंपरागत खेलों को नष्ट करते जा रहे हैं। उनका मानना था कि क्रिकेट, हॉकी, फुटबॉल और टेनिस जैसे खेल संपन्न वर्गों के खेल हैं। इन खेलों में औपनिवेशिक मनोदशा के दर्शन होते हैं और ये खेल हमारी अपनी मिट्टी से उपजे साधारण व्यायामों के मुकाबले कम प्रभावी शिक्षा ही दे पाते हैं, ऐसा उनका मानना था।

महात्मा गांधी के लेखों में से लिए गए इन तीन अंशों को पढ़िये और टॉमस आर्नल्ड या ह्यूज़ (स्रोत क) द्वारा शिक्षा और खेल-कूद के बारे में व्यक्त किए गए विचारों से उनकी तुलना कीजिए :

'आइए, अब शरीर की ओर दृष्टिपात करें। हर रोज़ एक घंटा टेनिस, फुटबॉल अथवा क्रिकेट खेल लेने से क्या हम शरीर को शिक्षित हुआ कह सकते हैं? यह सच है कि शरीर इसमें मजबूत होता है। लेकिन जैसे जंगल में मनमाना दौड़ने-फिरनेवाले घोड़े का शरीर मजबूत तो कहा जा सकता है, किंतु शिक्षित नहीं कहा जा सकता, उसी प्रकार ऐसा शरीर मजबूत होते हुए भी शिक्षित नहीं कहा जा सकता। शिक्षित शरीर नीरोग होता है, मजबूत होता है, कसा हुआ होता है और उसके हाथ-पैर आदि भी इच्छित कार्य कर सकते हैं। उसके हाथों में कुदाली, फावड़ा, हथौड़ा, आदि सुशोभित होते हैं और ये हाथ इन सबका उपयोग भी कर सकते हैं। तीस मील की यात्रा करते हुए शिक्षित शरीर थकेगा नहीं; ऐसी शरीरिक शिक्षा कैसे मिलती है? हम कह सकते हैं कि आधुनिक पाठ्यक्रम में इस दृष्टि से शरीरिक शिक्षा नहीं दी जाती।'

'सच्ची शिक्षा क्या है', 20 फरवरी 1926, *संपूर्ण गांधी वाङ्मय,* खण्ड 30.

'लेकिन, अगर यह हकीकत हो कि इस पवित्र भूमि पर क्रिकेट और फुटबॉल का चलन होने से पहले आपके अपने राष्ट्रीय खेल हों तो मैं आपसे अनुरोध करूँगा कि आपकी संस्था को उन्हें पुन: प्रतिष्ठित करना चाहिए। मैं जानता हूँ कि भारत के कई बहुत अच्छे देशी खेल हैं। वे क्रिकेट और फुटबॉल की ही तरह रोचक और उत्साहवर्धक हैं। उनमें खतरे भी उतने ही रहते हैं और ऊपर से उनकी एक खूबी यह है कि वे व्ययसाध्य नहीं होते, क्योंकि उनपर लगभग कोई खर्च नहीं बैठता।'

महिंद कालेज, गैल में भाषण, 24 नवंबर 1927, *संपूर्ण गांधी वाङ्मय,* खण्ड 35.

'मेरी दृष्टि में स्वस्थ शरीर वह है जो आत्मा का अंकुश मानता है और उसकी सेवा के साधन के रूप में सदा तैयार रहता है। मेरी राय में ऐसे शरीर फुटबॉल के मैदान में नहीं बनाये जाते। वे तो अनाज के खेतों और फार्मों में बनाये जाते हैं। मेरा आपसे अनुरोध है कि आप इस संबंध में विचार करें और आपको मैंने जो कुछ कहा है उसकी सच्चाई के समर्थन में असंख्य उदाहरण मिल जायेंगे। हमारे उपनिवेशों में उत्पन्न भारतीय फुटबॉल और क्रिकेट के इस उन्माद के प्रवाह में बह जाते हैं। कुछ विशेष स्थितियों में इन खेलों का अपना महत्व हो सकता है। आप इस सीधी-सादी बात पर विचार क्यों नहीं करते कि मानव जाति का बहुत बड़ा भाग जिनके शरीर और मस्तिष्क शक्तिशाली हैं, सिर्फ किसान ही हैं, वे इन खेलों को जानते तक नहीं और वे ही संसार में सर्वश्रेष्ठ हैं।'

पत्र : लाजरस को, 17 अप्रैल 1915, *संपूर्ण गांधी वाङ्मय,* खण्ड 13.

© NCERT not to be republished

नहीं रहे। हालाँकि नायडू भी इंग्लैंड के खिलाफ़ 1932 में शुरू होनेवाले पहले क्रिकेट मैचों तक अपने पुराने फ़ॉर्म में नहीं थे, पर देश के पहले टेस्ट कप्तान के रूप में इतिहास में उनका नाम सुरक्षित है।

इस तरह भारत ने आज़ाद होने के डेढ़ दशक पहले ही टेस्ट क्रिकेट में प्रवेश ले लिया था। ऐसा इसलिए संभव हुआ चूँकि 1877 में अपनी शुरुआत से ही टेस्ट क्रिकेट ब्रिटिश साम्राज्य के विभिन्न हिस्सों के बीच खेला जाता था न कि संप्रभु राष्ट्रों के बीच। पहला टेस्ट ऑस्ट्रेलिया व इंग्लैंड के बीच जब खेला गया तब ऑस्ट्रेलिया गोरों का उपनिवेश-भर था, स्वशासी डोमीनियन राज्य भी नहीं था। उसी तरह, वेस्ट इंडीज़ के नाम से जाने जानेवाले विभिन्न कैरिबियाई देश दूसरे विश्वयुद्ध के काफ़ी बाद तक ब्रिटिश उपनिवेश ही थे।

3.2 खेल और वि-औपनिवेशीकरण

यूरोपीय साम्राज्यों से आज़ादी हासिल कर स्वतंत्र राष्ट्रों के बनने की प्रक्रिया को वि-औपनिवेशीकरण कहा जाता है। सन् 1947 में भारत की आज़ादी से शुरू होकर यह सिलसिला अगली आधी सदी तक चलता रहा। इस सिलसिले का असर व्यापार-वाणिज्य, सैन्य क्षेत्र, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति और अंततः खेल में ब्रिटेन के पतन के रूप में हुआ। लेकिन यह सब एकबारगी नहीं हुआ – क्रिकेट संगठन में उत्तर-साम्राज्यवादी ब्रिटेन के प्रभाव को कम होने में अच्छा-खासा वक्त लगा।

भारत की आज़ादी से ब्रितानी साम्राज्य के खात्मे का बिगुल तो बज गया था, पर क्रिकेट के अंतर्राष्ट्रीय आयोजन पर साम्राज्यवादी क्रिकेट कॉन्फ्रेन्स का नियंत्रण बरकरार रहा। आईसीसी पर, जिसका 1965 में नाम बदलकर इंटरनैशनल क्रिकेट कॉन्फ्रेन्स हो गया, इसके संस्थापक सदस्यों का वर्चस्व रहा, उन्हीं के हाथ में कार्यकलाप के वीटो अधिकार रहे। इंग्लैंड व ऑस्ट्रेलिया के विशेषाधिकार 1989 में जाकर खत्म हुए और वे अब सामान्य सदस्य रह गए।

पिछली सदी के 50 व 60 के दशक में विश्व क्रिकेट के मिज़ाज का पता इस बात से मिलता है कि इंग्लैंड तथा कॉमनवेल्थ के दूसरे देशों-ऑस्ट्रेलिया व न्यूज़ीलैंड-ने दक्षिण अफ़्रीका जैसे देश के साथ क्रिकेट खेलना जारी रखा, जहाँ न सिर्फ़ नीतिगत तौर पर नस्ली भेदभाव बरता जाता था, बल्कि टेस्ट मैचों में अश्वेतों (द. अफ़्रीका की बहुमत आबादी) को खेलने की मनाही थी। भारत, पाकिस्तान व वेस्ट इंडीज़ ने हालाँकि दक्षिण अफ़्रीका का बहिष्कार किया, लेकिन अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद् (आईसीसी) में उनकी इतनी ताकत नहीं थी कि उसे खेल से प्रतिबंधित कर दें। यह तभी हो पाया जब एशिया व अफ़्रीका में उपनिवेशवाद से नए आज़ाद हुए देशों ने और साथ में ब्रिटेन की उदारवादी हवा ने अंग्रेज़ी क्रिकेट अधिकारियों पर दबाव डालकर 1970 में ब्रिटेन के दक्षिण अफ़्रीकी दौरे को रद्द करवाने में कामयाबी पायी।

2018-19
© NCERT not to be republished

4 आज के दौर में व्यापार, मीडिया और क्रिकेट

क्रिकेट 1970 के दशक में काफ़ी बदल गया: यह ऐसा दौर था जिसमें इस पारंपरिक खेल ने बदलते ज़माने के साथ खुद को ढाल लिया। अगर 1970 में दक्षिण अफ़्रीका को क्रिकेट से बहिष्कृत किया गया, तो 1971 को इसलिए याद किया जाएगा चूँकि इस साल इंग्लैंड व ऑस्ट्रेलिया के बीच सबसे पहला एकदिवसीय मैच मेलबर्न में खेला गया। क्रिकेट का यह छोटा संस्करण इतना लोकप्रिय हुआ कि 1975 में पहला विश्व कप खेला गया और सफल रहा। फिर 1977 में, जब क्रिकेट टेस्ट मैचों की सौवीं जयंती मना रहा था, तो खेल हमेशा के लिए बदल गया। इस बदलाव में किसी खिलाड़ी या प्रशासक का नहीं, बल्कि एक व्यवसायी का हाथ था।

केरी पैकर नामक ऑस्ट्रेलियाई टेलीविज़न मुग़ल ने क्रिकेट के प्रसारण की बाज़ारी संभावनाओं को भाँपकर दुनिया के 51 बेहतरीन खिलाड़ियों को उनके बोर्ड की मर्ज़ी के खिलाफ़ अनुबंध पर ले लिया और दो सालों तक वर्ल्ड सीरीज़ क्रिकेट के नाम से समांतर, ग़ैर-अधिकृत 'टेस्ट' व 'एकदिवसीय' खेलों का आयोजन किया। पैकर का यह 'सर्कस' (इसे तब यही कहा जाता था) दो सालों के बाद पैक हो गया, लेकिन टेलीविज़न दर्शकों को लुभाने के लिए उसके द्वारा किए गए बदलाव स्थायी साबित हुए, और इससे खेल का रंग-ढंग ही बदल गया।

रंगीन वर्दी, हिफ़ाज़ती हेल्मेट, क्षेत्ररक्षण की पाबंदियाँ, रौशनी जलाकर रात को क्रिकेट खेलना, आदि कुछ ऐसी चीज़ें हैं जो पैकर के बाद क्रिकेट का स्थायी हिस्सा बन गए। सबसे अहम बात, पैकर ने ज़ाहिर कर दिया कि क्रिकेट का बाज़ार है और इसे बेचकर बहुत पैसे कमाये जा सकते हैं। टेलीविज़न कंपनियों को टेलीविज़न प्रसारण का अधिकार बेचकर क्रिकेट बोर्ड अमीर हो गए। टेलीविज़न कंपनियों ने विज्ञापन-समय व्यावसायिक कंपनियों को बेचे, जिन्हें इतना बड़ा दर्शक-समूह और कहाँ मिलता! निरंतर टीवी कवरेज के बाद क्रिकेटर सेलेब्रिटी बन गए और उन्हें अपने क्रिकेट बोर्ड से तो ज़्यादा वेतन मिलने ही लगा, पर उससे भी बड़ी कमाई के साधन टायर से लेकर कोला तक के टीवी विज्ञापन हो गए।

टीवी प्रसारण से क्रिकेट बदल गया। इसके ज़रिए क्रिकेट की पहुँच छोटे शहरों व गाँवों के दर्शकों तक हो गई। क्रिकेट का सामाजिक आधार भी व्यापक हुआ। महानगरों से दूर रहनेवाले बच्चे जो कभी बड़े मैच नहीं देख पाते थे, अब अपने नायकों को देखकर सीख सकते हैं।

उपग्रह (सैटेलाइट) टीवी की तकनीक और बहु-राष्ट्रीय कंपनियों की दुनिया भर की पहुँच के चलते क्रिकेट का वैश्विक बाज़ार बन गया। सिडनी में चल रहे मैच को अब सीधे सूरत में देखा जा सकता था। इस मामूली बात ने क्रिकेट की सत्ता का केंद्र ही बदल दिया: जिस प्रक्रिया की शुरुआत ब्रिटिश साम्राज्य के पतन से हुई थी, वह वैश्वीकरण में अपने तार्किक

© NCERT not to be republished

अंजाम तक पहुँची। चूँकि भारत में खेल के सबसे ज़्यादा दर्शक थे और यह क्रिकेट खेलने वाले देशों में सबसे बड़ा बाज़ार था, इसलिए खेल का गुरुत्व केन्द्र दक्षिण एशिया हो गया। प्रतीकात्मक तौर पर आईसीसी मुख्यालय का लंदन से टैक्स-फ़्री दुबई में आना स्वाभाविक लगता है।

अंग्रेज़ी-ऑस्ट्रेलियाई धुरी से गुरुत्व केन्द्र के खिसकने की एक और निशानी ये है कि हाल के वर्षों में क्रिकेट के नए तकनीकी प्रयोग भारतीय उपमहाद्वीप के खिलाड़ियों ने शुरू किए हैं। पाकिस्तान ने गेंदबाज़ी को 'दूसरा' व 'रिवर्स-स्विंग' नाम के दो अहम हथियार दिए। ये दोनों ईजाद महाद्वीपीय स्थितियों की उपज हैं। 'दूसरा' इसलिए कि भारी बल्लों से आक्रामक बल्लेबाज़ी करनेवाले खिलाड़ी उँगलियों की स्पिन को बेकार साबित किए दे रहे थे और 'रिवर्स स्विंग' इसलिए कि खुली धूप में, धूल उड़ाती, बेजान पिचों पर तेज़ गेंदें घुमाई जा सकें। इन दोनों प्रयोगों को शुरू-शुरू में इंग्लैंड व ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों ने शक की नज़र से देखा, उन्हें लगा कि ये तो चोरी-छिपे क्रिकेट के नियमों के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है। वक्त के साथ यह मान लिया गया कि क्रिकेट के कानून सिर्फ ऑस्ट्रेलियाई या अंग्रेज़ी स्थितियों के मुताबिक नहीं बनाए जा सकते और इन जुगाड़ों को पूरी दुनिया के गेंदबाज़ों ने अपना लिया।

लगभग 150 साल पहले भारत के अग्रणी क्रिकेटरों – पारसियों – को खेल के मैदान के लिए संघर्ष करना पड़ा था। आज वैश्विक बाज़ार ने हिन्दुस्तानी क्रिकेटरों को खेल का सबसे मशहूर और अमीर खिलाड़ी बना दिया है, पूरी दुनिया जैसे अब उनका रंगमंच हो गया है। इस ऐतिहासिक बदलाव के पीछे कुछ छोटे-मोटे कारण भी थे: शौकिया जेंट्लमेन की जगह वेतनभोगी पेशेवरों का आना, लोकप्रियता में टेस्ट मैच क्रिकेट का एकदिवसीय मैचों द्वारा पछाड़ दिया जाना और वैश्विक वाणिज्य व प्रौद्योगिकी में अहम बदलावों का होना। वक्त के साथ परिवर्तन को समझना ही इतिहास का काम है। इस अध्याय में हमने एक औपनिवेशिक खेल के इतिहास के ज़रिए इसके विस्तार को समझा और यह भी कि **उपनिवेशोत्तर** ज़माने में इसने खुद को कैसे ढाला।

नए शब्द

उपनिवेशोत्तर : उपनिवेश+उत्तर=आज़ादी के बाद।

© NCERT not to be republished

बॉक्स 2

हॉकी

आधुनिक हॉकी का उदय एक ज़माने में ब्रिटेन में बड़े पैमाने पर खेले जाने वाले परंपरागत खेलों से हुआ है। स्कॉटलैंड में खेले जाने वाले खेल शिंटी और इंग्लिश एवं वेल्श खेल बेंडी व आइरिश हर्लिंग को हॉकी का पूर्वज माना जा सकता है।

बहुत सारे दूसरे आधुनिक खेलों की तरह हमारे यहाँ भी हॉकी की शुरुआत औपनिवेशिक काल में ब्रिटिश सेना द्वारा ही की गई थी। पहले हॉकी क्लब की स्थापना 1885-1886 में कलकत्ता में हुई। ओलम्पिक खेलों की हॉकी प्रतिस्पर्धा में भारत को पहली बार 1928 में शामिल किया गया था। इस प्रतिस्पर्धा में ऑस्ट्रिया, जर्मनी, डेनमार्क और स्विट्ज़रलैंड को हराते हुए भारत फ़ाइनल तक जा पहुँचा। फ़ाइनल में भारत ने हॉलैंड को भी शून्य के मुकाबले तीन गोल से मात दे दी।

हॉकी के जादूगर ध्यानचंद जैसे खिलाड़ियों के खेल-कौशल और तीक्ष्णता ने हमारे देश को ओलम्पिक के कई स्वर्ण पदक दिलाए। 1928 से 1956 के बीच भारतीय टीम ने लगातार छः ओलम्पिक खेलों में स्वर्ण पदक जीता था। हॉकी की दुनिया में भारतीय वर्चस्व के इस स्वर्ण युग में भारत ने ओलम्पिक में कुल 24 मैच खेले और सभी में सफलता प्राप्त की। इन मैचों में भारतीय खिलाड़ियों ने 178 गोल (प्रति मैच औसतन 7.43 गोल) दागे और विपक्षी टीमें उनके खिलाफ़ केवल 7 ही गोल कर पायीं। हॉकी में भारत को बाकी दो स्वर्ण पदक 1964 के टोकियो ओलम्पिक और 1980 के मास्को ओलम्पिक में प्राप्त हुए थे।

बॉक्स 3

पोलो

पोलो को सेना और भागदौड़ के माहिर नौजवानों के लिए अच्छा खेल माना जाता था। इंग्लैंड के पुराने खेलों में से एक का विश्लेषण करते हुए *इलस्ट्रेटेड लंदन न्यूज़* ने दावा किया था :

'कसरत के तौर पर ... इस साहसिक और गरिमापूर्ण खेल से सैनिकों को बल्लम व तलवार के या अन्य सैन्य हथियारों के इस्तेमाल में और ज़्यादा दक्षता प्राप्त हो सकती है। इसके साथ ही उन्हें रकाब में और मज़बूती से जमे रहने तथा पलक झपकते दाहिने या बाएँ मुड़ने का अभ्यास भी होगा जो कि युद्ध के मोर्चे पर बेहद उपयोगी साबित होगा।'

इलस्ट्रेटेड लंदन न्यूज़, 1872 से उद्धृत।

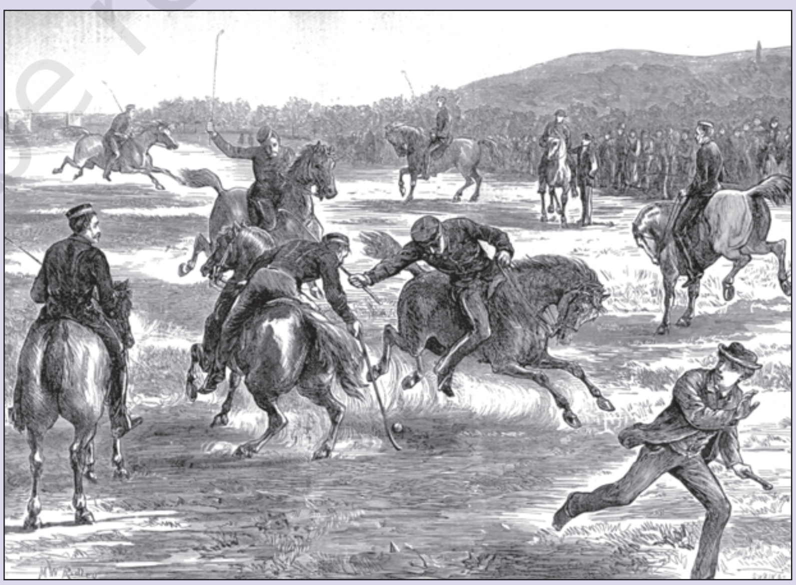

चित्र 15 – पोलो की पश्चिम यात्रा
पोलो मध्य एशिया का एक खेल है, जो भारत में आया और जिसे पश्चिम में औपनिवेशिक अधिकारी ले गए। सुल्तान कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु पोलो खेलते समय घोड़े से गिरने के कारण 1210 ई. में हुई।

क्रियाकलाप

1. पढ़ाई-लिखाई में खेलों के महत्व पर रग्बी स्कूल के प्रधानाचार्य टॉमस आर्नल्ड और महात्मा गांधी के बीच एक काल्पनिक बातचीत के बारे में सोचिए। दोनों के कथन क्या होते? पूरी बातचीत को लिखिए।
2. किसी एक स्थानीय खेल के इतिहास का पता लगाइए। अपने माता-पिता और उनसे भी पुरानी पीढ़ी के लोगों से पूछिए कि जब वे बच्चे थे तो वह खेल कैसे खेला जाता था। तुलना कीजिए कि क्या उस खेल को अभी भी उसी तरह खेला जाता है। अगर कोई बदलाव आए हैं तो इस बात पर विचार कीजिए कि उनके पीछे किन ऐतिहासिक शक्तियों का हाथ रहा होगा।

क्रियाकलाप

प्रश्न

1. टेस्ट क्रिकेट कई मायनों में एक अनूठा खेल है। इस बारे में चर्चा कीजिए कि यह किन-किन अर्थों में बाकी खेलों से भिन्न है। ऐतिहासिक रूप से एक ग्रामीण खेल के रूप में पैदा होने से टेस्ट क्रिकेट में किस तरह की विलक्षणताएँ पैदा हुई हैं?
2. एक ऐसा उदाहरण दीजिए जिसके आधार पर आप कह सकें कि उन्नीसवीं सदी में तकनीक के कारण क्रिकेट के साज़ो-सामान में परिवर्तन आया। साथ ही ऐसे उपकरणों में से भी कोई एक उदाहरण दीजिए जिनमें कोई बदलाव नहीं आया।
3. भारत और वेस्ट इंडीज़ में ही क्रिकेट क्यों इतना लोकप्रिय हुआ? क्या आप बता सकते हैं कि यह खेल दक्षिणी अमेरिका में इतना लोकप्रिय क्यों नहीं हुआ?
4. निम्नलिखित की संक्षिप्त व्याख्या कीजिए :
   - भारत में पहला क्रिकेट क्लब पारसियों ने खोला।
   - महात्मा गांधी पेंटांग्युलर टूर्नामेंट के आलोचक थे।
   - आईसीसी का नाम बदल कर *इम्पीरियल* क्रिकेट कॉन्फ्रेंस के स्थान पर *इंटरनैशनल* (अंतर्राष्ट्रीय) क्रिकेट कॉन्फ्रेंस कर दिया गया।
   - आईसीसी मुख्यालय लंदन की जगह दुबई में स्थानांतरित कर दिया गया।
5. तकनीक के क्षेत्र में आए बदलावों, खासतौर से टेलीविज़न तकनीक में आए परिवर्तनों से समकालीन क्रिकेट के विकास पर क्या प्रभाव पड़ा है?

© NCERT not to be republished

not to be republished © NCERT